हिन्दी गद्य साहित्य का विकास

हिन्दी का गद्य-साहित्य बहुत पुराना नहीं है। इसके विपरीत हिन्दी-कविता की जड़ें कम-से-कम एक हजार वर्ष पुरानी हैं। ठीक अर्थों में हिन्दी के वास्तविक गद्य का विकास ईसा की ग्यारहवीं सदी से ही हुआ। वैसे इसके पहले की भी कुछ रचनाएं उपलब्ध होती हैं, लेकिन उनकी भाषा क्षेत्रीय भाषा-मिश्रित खड़ी बोली थी। सन् 1530 में गंग कवि की लिखी 'चन्द्र बरनन की महिमा' और सन् 1624 में जटमल-रचित 'गोरा बादल की कथा' हिन्दी-गद्य की उल्लेखनीय कृतियां मानी जाती हैं। लेकिन इन दोनों पुस्तकों की भाषा में ब्रज बोली और खड़ी बोली का मिश्रण है। सन् 1732 के लगभग पं. रामप्रसाद निरंजनी ने संस्कृत के ग्रंथ 'योग वशिष्ठ' का हिन्दी गद्यानुवाद किया। इसकी भाषा अपेक्षाकृत अधिक परिष्कृत है। तब भी हिन्दी के गद्य का वास्तविक सूत्रपात 19वीं सदी के उत्तरार्ध में ही हुआ। इसे 'खड़ी बोली' कहा गया। यह नामकरण फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना के बाद लल्लूलाल ने किया। उन्होंने अपने ग्रंथ 'प्रेम-सागर' में सबसे पहली बार 'खड़ी बोली' शब्द का प्रयोग भाषा-विशेष के लिए किया।

आधुनिक हिन्दी गद्य के उन्नायकों में मुंशी सदासुखलाल (रचनाकाल संवत् 1803-1821), मुंशी इंशाअल्ला खां (संवत् 1855-56), पं. लल्लूलाल (संवत् 1820-22) और सदल मिश्र (संवत् 1884-1905) को माना जाना चाहिए। इन चारों में मुंशी सदासुखलाल की भाषा में सबसे अधिक व्यावहारिक और निखरी हुई खड़ी बोली का रूप मिलता है। मुंशी इंशाअल्ला खां ने 'रानी केतकी की कहानी' में हिन्दी और उर्दू दोनों को देवनागरी लिपि के माध्यम से पास लाने का प्रयत्न किया। उन्होंने 'हिन्दी छुट किसी और का पुट नहीं' लिखकर अपना संकेत 'खड़ी' बोली के लिए ही किया था।

हिन्दी के उक्त चारों लेखकों का रचना-काल लगभग एक ही है। फिर भी इसमें से किसी की भी भाषा पूरी तरह साफ-सुथरी और चुस्त-दुरुस्त नहीं है। किसी में अधिक पंडिताऊपन है, तो किसी में फारसीपन। इन लेखकों के बाद ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दी गद्य का प्रचार हुआ। मिशनरियों ने अपने धर्म-प्रचार के लिए गद्य में छोटी-छोटी पुस्तकें प्रकाशित कीं। इसी समय सर चार्ल्स वुड ने शिक्षा के प्रचार के लिये गांवों और कस्बों में देशी-स्कूल खुलवाये। उसी समय यह प्रश्न उठा कि शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो या उर्दू। काशी के राजा शिवप्रसाद ने, जिनकी शिक्षा-विभाग में इन्सपेक्टर के पद पर नियुक्ति हुई थी, हिन्दी का पक्ष ग्रहण किया। राजा शिवप्रसाद के प्रयत्नों से सरकारी स्कूलों में हिन्दी की शिक्षा को भी स्थान मिला। उन्होंने कतिपय लेखकों से हिन्दी में पाठ्य-पुस्तकें तैयार करवाईं तथा स्वयं भी लगभग 22 पुस्तकें लिखीं। राजा शिवप्रसाद का विरोध उर्दू भाषा से नहीं बल्कि फारसी लिपि से था। वे चाहते थे कि स्कूलों में फारसी लिपि के साथ-साथ नागरी लिपि का भी व्यवहार हो। इसके अतिरिक्त आगरा के राजा लक्ष्मणसिंह ने भी हिन्दी का पक्ष ग्रहण किया। राजा लक्ष्मण सिंह ने राजा शिवप्रसाद की 'उर्दू परस्ती' के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने हिन्दी में फारसी-अरबी के प्रचलित शब्दों के प्रयोग तक को अनुचित ठहराया। फारसी के प्रभाव से हिन्दी को मुक्त करने के लिए उन्होंने सन् 1832 में 'प्रजा-हितैषी' नामक पत्रिका निकाली। 'अभिज्ञान शाकुन्तल', 'मेघदूत' तथा 'रघुवंश' के भी हिन्दी में अनुवाद किये। वैसे उनकी भाषा में भी यत्र-तत्र बेढंगे तथा पुराने प्रयोग मिलते हैं, फिर भी उन्होंने हिन्दी गद्य को प्रथम बार पुष्ट एवं व्यवस्थित साहित्यिक रूप दिया। आर्य समाज तथा उसकी स्थापना करने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी गद्य के विकास में हाथ बंटाया। स्वामी दयानन्द ने अपने मत के प्रचार के लिए एकमात्र पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिन्दी में की। वे अपने उपदेश भी खड़ी बोली गद्य में ही दिया करते थे। सन् 1816 में ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने वेदान्त-सूत्रों का स्वतन्त्र भाष्य हिन्दी में छपवाया।

सन् 1857 के राजद्रोह के बाद **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** का हिन्दी रंगमंच पर उदय हुआ। भारतेन्दु की भाषा-शैली का प्रभाव उनके समकालीन लेखकों पर भी पड़ा उनकी भाषा-शैली में तत्सम् शब्दों का अभाव था। उन्होंने प्रतिदिन व्यवहार में आने वाले उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया। भारतेन्दु के समकालीन लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' आदि प्रमुख हैं। इन लेखकों ने हिन्दी में मौलिक नाटक, कविता, उपन्यास, निबन्ध, आलोचना आदि साहित्य के विविध रूपों को जन्म देकर हिन्दी के आरम्भिक विकास में सहायता दी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी-गद्य का प्रवर्तक मानना चाहिये। उन्होंने गद्य का रूप निर्धारित किया और उसे दो छोरों के झगड़ों से बचाया। एक छोर था राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद का, जो उर्दू-प्रधान शैली के उन्नायक थे और दूसरे छोर थे राजा लक्ष्मणसिंह, जो संस्कृत की तत्सम प्रधान शैली का समर्थन कर रहे थे। इन दोनों राजाओं के हाथ से मोर्चे को छीनकर भारतेन्दुजी ने गद्य के विकास और प्रभाव के लिये कई रास्ते निकाले। उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, समालोचना, समाचार-पत्र आदि विविध विधाओं से गद्य को नवजीवन दिया। भारतेन्दु के ही प्रयत्नों से हिन्दी में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ और इससे ही हिन्दी गद्य के परिष्कार में वास्तविक सहायता मिली।

इन्हीं के बाद हुए **महावीरप्रसाद द्विवेदी**। भाषा को परिमार्जित और शुद्ध करने की ओर सबसे पहले द्विवेदीजी ने ही ध्यान दिया। उन्होंने 'सरस्वती' का सम्पादन किया और इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने अशुद्ध गद्य लिखने वालों की आलोचना की। स्वयं शुद्ध भाषा लिखकर उन्होंने सही खड़ी बोली का नमूना उपस्थित किया। उन्होंने अन्य लेखकों को शुद्ध हिन्दी लिखने की प्रेरणा दी। इस तरह समकालीन लेखकों पर द्विवेदीजी का काफी प्रभाव पड़ा। इन लेखकों में माधवप्रसाद मिश्र, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', गोपालराम गहमरी, श्यामसुन्दर दास, पूर्णसिंह, पद्‌मसिंह शर्मा, बदरीनाथ भट्ट आदि मुख्य थे। मिश्र बन्धुओं, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और श्यामसुन्दर दास ने भी उन्हीं के समय लिखना आरम्भ किया। आगे चलकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने समास-प्रधान शैली को जन्म देकर आधुनिक हिन्दी गद्य को नया रूप दिया। उन्होंने पहली बार हिन्दी साहित्य का प्रामाणिक इतिहास लिखा। इसी युग में कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द का आविर्भाव हुआ। नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद ने नवीन शैली को जन्म दिया और हिन्दी के नाटकों को एक सुव्यवस्थित रूपरेखा मिली। प्रसाद ने ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं के आधार पर कई नाटक लिखे; उनमें 'अजातशत्रु', 'स्कन्दगुप्त', 'चन्द्रगुप्त',

'जनमेजय का नागयज्ञ', 'ध्रुवस्वामिनी' जैसे साहित्यिक कोटि के नाटक आते हैं।

इस तरह आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद से ही हिन्दी का आधुनिक काल आरम्भ होता है। यही हिन्दी के गद्य-विकास का चरम सोपान है और वह नाटक, उपन्यास, कहानी आदि अनेक रूपों में निखर कर सामने आया है।

निबंध

निबन्ध का आविर्भाव और विकास साहित्य में अपेक्षाकृत विलम्ब से होता है : अच्छे निबन्धों की रचना के लिए पहले अन्य साहित्य-विधाओं में श्रेष्ठ साहित्य के निर्माण की शर्त इसलिए होती है कि निबन्ध में प्राण-संचार करने के लिए परिष्कृत रुचि और बुद्धि के पाठक अन्य साहित्य-विधाओं से ही तैयार होते हैं। निबन्ध में केवल साहित्य-सृजन ही नहीं होता, वरन् साथ ही साथ जीवन तथा साहित्य की व्याख्या और आलोचना भी होती है। व्यक्तित्व की छाप साहित्य के अन्य रूपों की अपेक्षा निबन्ध में अधिक दिखाई पड़ती है। शैली के यथार्थ रूप का निखार गद्य में ही होता है। हिन्दी के निबन्ध का यथार्थ विकास भारतेन्दु बाबू से ही प्रारम्भ होता है। भारतेन्दु-युग भारत में राष्ट्रीय नवचेतना का युग था। मध्ययुगीन सामंतीय प्रथा का अन्त होकर समाज का निर्माण एक नये बौद्धिक आधार पर होना आरम्भ हो गया था। तत्कालीन साहित्य में हमें नवचेतना और नव-जागरण के दर्शन होते हैं।

भारतेन्दु-युग के निबन्धों और लेखों में इसी प्रकार हमें सजीवता का पूरा-पूरा आभास मिलता है। प्राचीन रूढ़ियों के प्रति उदासीनता के साथ नये आलोक की माँग उसमें है। उस युग के लेखकों की भाषा प्रवाहपूर्ण, मुहावरेदार, सजीव और चटपटी है। जीवन का ज्वलंत उल्लास और आमोद उसमें छलकता हुआ प्रतीत होता है। उस समय के निबन्ध-लेखक अपनी जिंदादिली का पूरा प्रमाण अपने लेखों और निबंधों में ही देते थे। वे जीवन के सभी क्षेत्रों से विषयों का चयन करते और बिना किसी अड़चन के उन पर स्वच्छंद रीति से प्रवाहमयी भाषा में सशक्त अभिव्यक्ति करते थे। यही कारण है कि भारतेन्दु-युग के निबन्ध-लेखकों की तुलना फ्रांसीसी लेखक मोंटेन और अंग्रेज लेखक बेकन से की जाती है। भारतेन्दु, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट और 'प्रेमघन', उस युग के प्रसिद्ध लेखक हैं। भारतेन्दु-युग के लेखकों ने जिस शैली से निबन्ध लिखना प्रारम्भ किया था, यदि वह परम्परा चलती रहती तो निस्संदेह आज हिन्दी निबन्ध अनेक दृष्टियों से बहुत आगे बढ़ गया होता। इस युग के निबन्ध-लेखक अपनी आभ्यन्तर प्रेरणा से ही लिखने में प्रवृत्त होते थे, उन्हें किसी बाह्य प्रेरणा की आवश्यकता नहीं थी। इसी कारण उनके निबंधों में वैयक्तिकता की मात्रा बहुत अधिक है।

भारतेन्दु युग के बाद निबन्ध साहित्य का विकास बहुत संतोषजनक रूप में नहीं हुआ। द्विवेदी युग गद्य तथा पद्य की भाषा के परिष्कार का युग था। स्वयं द्विवेदीजी का ध्यान भाषा को व्याकरण-सम्मत बनाने तथा कविता के अनुरूप करने में रहा। फलतः मौलिक निबन्ध तथा लेख लिखने वालों को भाषा की अशुद्धियों का भय अधिक बना रहा और व्याकरण के कठोर शासन ने त्रस्त होकर स्वच्छंद रूप में लिखने की प्रवृत्ति कम हो गयी। भारतेन्दु-युगीन लेखक बड़े निरंकुश भाव से लिखते थे—वैसी निरंकुशता द्विवेदी युग में नहीं रही। हिन्दी गद्य को व्यवस्थित बनाने के प्रयत्नों से मौलिक निबन्ध लेखकों का अभाव हुआ और जिंदादिली भी कम होती गई। द्विवेदी युग के केवल दो लेखक ही हमें ऐसे दृष्टिगत होते हैं, जो बड़ी स्वतंत्र शैली में लेख निबन्ध लिखने में लीन रहे। बाबू बालमुकुन्द और सरदार पूर्णसिंह ने इस युग में जो निबन्ध लिखे, वे बहुत ही उत्तम कोटि के हैं और उनमें प्रवाह के साथ पूरी मौलिकता विद्यमान है। महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में वैसी मौलिकता तथा वैयक्तिकता नहीं है जैसी इन दोनों लेखकों में पाई जाती है। 'बंगवासी' नामक पत्र में सम्पादक के रूप में गुप्तजी ने जो टिप्पणियाँ और लेख लिखे, वे बहुत मार्मिक और व्यंग्यपूर्ण हैं।

द्विवेदी युग के अन्तिम चरण में एक मौलिक एवं समर्थ निबन्ध-लेखक साहित्य क्षेत्र में अवतरित हुए, जिन्होंने अपने समीक्षात्मक तथा विचारात्मक निबन्धों द्वारा हिन्दी निबन्धों को परिपूर्ण बनाने में सबसे अधिक योग दिया; उनका नाम है आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। शुक्लजी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ विवेचक निबन्धकार हैं। उनके निबन्धों का क्षेत्र भाव और मनोविकार के साथ काव्यालोचन था। पहले उन्होंने समीक्षात्मक निबन्ध लिखे, जो जायसी, तुलसी और सूर ग्रन्थावली में भूमिका रूप में प्रकाश में आये। ये निबन्ध विशाल होने के कारण प्रबन्ध कोटि के हैं। इसके बाद ही उन्होंने काव्यशास्त्र के समालोचना-पक्ष से सम्बद्ध विषयों पर फुटकर निबन्ध लिखे। भाव और मनोविकारों पर लिखे हुए उनके निबन्ध हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। 'चिन्तामणि' उनके निबन्धों का संग्रह है। शुक्लजी के पथ-प्रदर्शन के कारण विचारात्मक तथा भावात्मक निबन्धों का ताँता लग गया। एक ओर आलोचना में स्पष्टता तथा स्वच्छन्दता का समावेश हुआ, तो दूसरी ओर निबन्ध की सीमा-मर्यादा में भी विस्तार हुआ।

आलोचना के शास्त्रीय तथा प्रयोग पक्ष पर निबन्ध लिखने वालों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, गुलाबराय, शान्तिप्रिय द्विवेदी, डा. नगेन्द्र, डा. विजयेन्द्र स्नातक, नन्ददुलारे वाजपेयी, नलिनविलोचन शर्मा, रामविलास शर्मा और डा. देवराज आदि प्रमुख हैं।

निबन्ध-साहित्य के अन्तर्गत समीक्षात्मक लेख, भावात्मक लेख, विचारात्मक लेख आदि सभी वर्गों के फुटकर गद्य-लेखों का भी समावेश होता है।

नाटक

हिन्दी में लोक-रंगमंच और नाटकों का विकास 15वीं-16वीं सदी में हो गया था। परन्तु इन नाटकों में पद्य की प्रमुखता होती थी। उस समय रामलीला, रासलीला, कीर्तन मंडलियां ही इस कार्य को किया करती थीं। हिन्दी गद्य नाटकों का वास्तविक परिवर्तन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया। उनका प्रहसन 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' इस क्षेत्र में प्रथम मौलिक रचना है। भारतेन्दु को संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला भाषाओं का ज्ञान था। वे रंगमंच की आवश्यकताओं को भी पूरा ध्यान रखते थे। उन्होंने राजनैतिक, सामाजिक, पौराणिक और प्रेम-प्रधान सभी तरह के नाटक लिखे। उनकी कला में प्राचीन के प्रति श्रद्धा की भावना थी, तो वर्तमान चेतना का भी सुन्दर समन्वय था।

भारतेन्दु ने स्वयं नाटक तो लिखे ही, अपने समकालीन लेखकों को भी नाटक लिखने के लिए प्रेरित किया। उस काल में लाला श्रीनिवासदास का स्थान महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने नाट्यशास्त्र के नियमों के अनुसरण के साथ-साथ नवीनता को भी अपनाया। इसके बाद बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', राधाकृष्ण दास, किशोरीलाल गोस्वामी, देवकीनन्दन खत्री तथा प्रतापनारायण मिश्र के नाम आते हैं।

आधुनिक नाटकों के विकास का श्रेय जयशंकर प्रसाद को है। प्रसाद ने भारतीय नाट्य-शास्त्र के सिद्धान्तों को पाश्चात्य नाट्य-शास्त्र के सिद्धान्तों के साथ सफलतापूर्वक समन्वय किया। उन्होंने नाटकों में चरित्र-चित्रण की ओर विशेष ध्यान दिया। हिन्दी में ऐतिहासिक नाटक लिखकर प्रसाद ने हिन्दी-नाट्य-साहित्य को एक नई दिशा दी। उन्होंने तेरह नाटक लिखे। उनके नाटकों में प्राचीन भारत की संस्कृति का एक वृहद चित्र देखने को मिलता है।

प्रसाद के पश्चात् उनकी परम्परा का अनुसरण कर लिखने वाले अन्य नाटककार हैं–लक्ष्मीनारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, हरिकृष्ण प्रेमी, सेठ गोविन्द दास, विष्णु प्रभाकर आदि। पूरे नाटकों के साथ-साथ एकांकी नाटकों का आविर्भाव भी भारतेन्दु के ही समय में हुआ था। परन्तु प्रसाद के बाद उनको विशेष गति मिली। डा. रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर और उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने कई एकांकी नाटक लिखे।

उपन्यास

देवकीनन्दन खत्री को हिन्दी के प्रारम्भिक मौलिक उपन्यासकारों में सबसे ख्याति मिली। उनका लिखा 'चन्द्रकान्ता संतति' रोचक वर्णन और तिलिस्म तथा जासूसी से भरी घटनाओं के कारण जनसाधारण में इतना लोकप्रिय हुआ कि उसको पढ़ने के लिए कई लोगों ने हिन्दी सीखी। किशोरीलाल गोस्वामी ने 60 से ऊपर उपन्यास लिखे। गोपालराम गहमरी के उपन्यास भी उस समय रुचि के साथ पढ़े जाते थे।

हिन्दी की कहानी के बारे में कहा जाता है कि किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' ही पहली वास्तविक कहानी थी, लेकिन कहानी और उपन्यास इन दोनों विधाओं को गम्भीर रूप से यदि किसी ने प्रतिष्ठित किया, तो यह थे मुंशी प्रेमचंद। प्रेमचंद ने उपन्यास और कहानी दोनों ही के माध्यम से अपने युग की स्थितियों को समझा। और उन्हें सही ढंग से चित्रित किया। भाषा से लेकर शैली और कथानक तक में प्रेमचन्द ने एकदम नये प्रयोग किए। उस समय के यथार्थ को आदर्श के धरातल पर प्रस्तुत कर उन्होंने साहित्य को जन सामान्य के बीच पहुंचाने का काम किया। प्रेमचंद का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है 'गोदान'। उनके अन्य प्रमुख उपन्यास हैं : रंगभूमि, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, कर्मभूमि, गबन आदि।

प्रेमचंद के समय ही जयशंकर प्रसाद ने 'कंकाल' और 'तितली' दो उपन्यास लिखे। वृन्दावनलाल वर्मा ने ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा को जन्म दिया। चतुरसेन शास्त्री, राहुल सांकृत्यायन और प्रतापनारायण श्रीवास्तव ने भी ऐतिहासिक उपन्यास लिखे।

असल में प्रेमचन्द के उदय के साथ ही हिन्दी में उपन्यास और कहानी साहित्य की प्रगति इस गति से हुई कि दोनों को अलग-अलग करके देखा ही नहीं जा सकता। कौशिक से लेकर जैनेन्द्र, यशपाल, अज्ञेय, अश्क और भगवतीचरण वर्मा ने यदि कहानियां लिखीं, तो उपन्यास भी लिखे। अपने लेखन में इन सबने नये-नये प्रयोग किये। उन्होंने कहानी में सामान्य मानववादी परम्परा को ऊँचे धरातल तक उठा दिया।

यह समय राजनैतिक चेतना का था और विज्ञान की प्रगति काफी हो चुकी थी। संचार के साधनों के बढ़ते हुए आयामों से दुनिया की दूरी कम होती गयी, इसलिए हिन्दी का लेखन विदेशों की श्रेष्ठ रचनाओं से भी प्रभावित हुआ। वहां की श्रेष्ठ कृतियों के हिन्दी में अनुवाद हुए। उनसे हिन्दी-लेखकों को नयी प्रेरणायें मिलीं। इसलिए लेखन के कई स्तरों में बड़े-बड़े प्रयोग हुए।

सन् 1947 में देश आजाद हुआ। आजाद होते ही हिन्दी-साहित्य ने मुक्त रूप से विकास पाया। आज की हिन्दी कहानी और उपन्यासों में इतने अधिक विस्तार हुए हैं कि उनका एक बंधा-बंधाया रूप-रंग ही नहीं रह गया। मुक्त प्रयोगों और नए विचार-दर्शन से कथा-साहित्य प्रभावित हुआ। देहातों को नयी संस्कृति का केन्द्र मानकर नये ढंग से लिखने की प्रेरणा मिली। इस दृष्टि से 'रेणु' कृत 'मैला आंचल' की काफी चर्चा हुई। आज हिन्दी उपन्यास और कहानी में कई ऐसे नाम हैं, जो एकदम सामने आये हैं। उनमें कुछ नाम हैं–धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, फणीश्वर नाथ रेणु, कमलेश्वर, लक्ष्मीनारायण लाल, शैलेश मटियानी, भीष्म साहनी, राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा आदि।

कहानी

कहानी जीवन की मार्मिक अनुभूति की सोद्देश्य अभिव्यक्ति है। इसलिए लेखक का दृष्टिकोण सुधारवादी, आदर्शवादी या प्रगतिवादी हो सकता है। कहानी की घटनाएं यथार्थ और आदर्श में से किसी भी चिन्ताधारा की ओर उन्मुख हो सकती हैं। किन्तु आवश्यक यह है कि कहानी में प्रस्तुत चिन्ताधारा स्वस्थ हो। लक्ष्य की पूर्ति ही कहानी की सफलता है। श्रेष्ठ कहानी में उद्देश्य की अभिव्यक्ति उपदेश के रूप में नहीं, अपितु संकेत द्वारा की जाती है।

कहानी के भेद

साधारण रूप से हिन्दी की कहानियों को चार भागों में बांट सकते हैं–(1) घटना प्रधान, (2) चरित्र प्रधान, (3) वातावरण प्रधान और (4) भाव प्रधान।

(1) **घटना प्रधान कहानी**–जिस कहानी में विविध परिस्थितियों के निर्माण के आधार पर कथानक आगे बढ़ता है, उसे घटना प्रधान कहानी कहते हैं। दूसरे शब्दों में घटना प्रधान कहानी में पात्रों और परिस्थितियों के सम्बन्धों को प्रमुखता दी जाती है। सामान्यतया घटना प्रधान कहानी हम उस कहानी को कह सकते हैं, जिसमें लेखक एक पात्र को विभिन्न परिस्थितियों में डालता है और कहानी आगे बढ़ती रहती है। घटना प्रधान कहानी में घटनाओं की बहुलता होती है। जासूसी और तिलस्मी कहानियां प्रायः इसी श्रेणी में आती हैं। कला की दृष्टि से घटना प्रधान कहानी सबसे साधारण कोटि की मानी जाती है।

(2) **चरित्र प्रधान कहानी**–इस कोटि की कहानियों में लेखक का उद्देश्य कहानी के विभिन्न पात्रों के चरित्र का सुन्दर चित्रण होता है। ऐसी कहानी में लेखक किसी पात्र के चरित्र के किसी एक पक्ष को निखारना या उभारना चाहता है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर वह विविध परिस्थितियों तथा प्रसंगों की सृष्टि करता है, ताकि उस पात्र के चरित्र का सुन्दर और प्रभावशाली चित्रण हो सके। संक्षेप में कह सकते हैं कि ऐसी कहानी में कहानीकार का ध्येय चरित्र-निरूपण रहता है। गुलेरीजी की कहानी 'उसने कहा था' एक उत्कृष्ट चरित्र प्रधान कहानी है।

(3) **वातावरण प्रधान कहानी**–वातावरण प्रधान कहानी में उसकी परिस्थितियों के किसी एक अंग या किसी एक भावना को कथानक के विकास का माध्यम बनाकर कहानी को प्रभावोत्पादक बनाया जाता है। संक्षेप में इस प्रकार की कहानी में किसी घटना काल के वातावरण को सजीव तथा अनुप्राणित बनाया जाता है। कला की दृष्टि से वातावरण प्रधान कहानियां उच्च कोटि की मानी जाती हैं। ऐसी कहानियों में कहानीकार को अपनी

प्रतिभा, चातुर्य और कलात्मकता प्रदर्शित करने का पर्याप्त अवसर मिलता है। किसी वातावरण के चित्रण में कहानीकार अनोखे रंग भर सकता है और लाक्षणिक सौन्दर्य की राशि बिखेर सकता है और उनकी अभिव्यक्ति में अपनी कला को निखार सकता है।

(4) **भाव प्रधान कहानी**–भाव प्रधान कहानी में चरित्र, वातावरण या घटना की अपेक्षा भाव की प्रधानता होती है। इसी भाव के आधार पर कहानी के कथानक का विकास किया जाता है। ऐसी कहानी में कहानीकार पाठकों पर एक विशेष भाव की छाप छोड़ना चाहता है। इसी को दृष्टि में रखकर वह वातावरण तथा चरित्र की सृष्टि करता है। ऐसी कहानियां भी कला की दृष्टि से अच्छी मानी जाती हैं।

कहानी का विकास

आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ 'सरस्वती' और 'सुदर्शन' के प्रकाशन से 1900 ई. से माना जा सकता है। इसी आधार पर कहानी साहित्य के विकास को तीन भागों में बांटा जा सकता है–(1) आरम्भ काल (1900-1910), (2) विकास काल (1911-1946), और (3) उत्कर्ष काल (1946 से अब तक)।

आरम्भ काल (1900-1910 ई.)–हिन्दी की सर्वप्रथम आधुनिक कहानी किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' थी, जो 1900 ई. में 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई। इस कहानी को पूर्णतः मौलिक कहानी नहीं माना जा सकता, क्योंकि इस पर शेक्सपीयर के नाटक 'दी टेम्पेस्ट' (The Tempest) की छाप स्पष्ट दिखती है। इसी समय रामचन्द्र शुक्ल की मौलिक कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903 ई.) प्रकाश में आई। इसके बाद अनेक अनूदित, रूपान्तरित और मौलिक कहानियां लिखी गईं। इसके अतिरिक्त पार्वती नन्दन, उदयनारायण बाजपेयी, स्वामी सत्यदेव और गिरजाकुमार घोष ने भी कहानियां लिखीं।

आरम्भ काल की सबसे सुन्दर तथा महत्वपूर्ण कहानी बंग महिला की 'दुलाई वाली' (सरस्वती, मई 1907 ई.) है। इस कहानी में सामान्य जीवन की एक साधारण-सी घटना का यथार्थवादी चित्रण बहुत प्रभावशाली ढंग से किया गया है। इस कहानी में कहानी कला के समुचित निर्वाह का प्रयास दृष्टिगोचर होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक कहानी का आरंभ तो हो गया परन्तु उसमें प्रौढ़ता नहीं आ सकी थी।

विकास काल (1911-1946 ई.)–विकास काल में हिन्दी कहानी में चरित्र-चित्रण और भाव पक्ष सभी को महत्व प्रदान किया गया। विषय की दृष्टि से जहां एक ओर ग्राम जीवन की झांकी, पारिवारिक जीवन की समस्याओं और ऐतिहासिक-सांस्कृतिक गाथाओं का चित्रण किया गया, वहां दूसरी ओर यथार्थवादी, मनोवैज्ञानिक, कलात्मक और हास्य रस की कहानियां भी लिखी गईं।

इस युग के कहानी-लेखकों में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भर नाथ कौशिक, सुदर्शन, चतुरसेन शास्त्री, सियारामशरण गुप्त, वृन्दावनलाल वर्मा, उग्र, यशपाल, भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवतीचरण वर्मा, जैनेन्द्र, सुभद्राकुमारी चौहान, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, होमवती देवी, शिवपूजन सहाय, उषा देवी मित्रा, रायकृष्ण दास, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, विष्णु प्रभाकर और मन्मथनाथ गुप्त के नाम स्मरणीय हैं। इनमें से कुछ का संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया गया है–

हिन्दी कथा साहित्य में श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का नाम सदैव आदर से लिया जायेगा। उनकी कहानी 'उसने कहा था' हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कहानी मानी गई। पवित्र प्रेम के निःस्वार्थ बलिदान की इस अमर कहानी ने गुलेरीजी को अमर बना दिया। यह कहानी कला-विधान की दृष्टि से अनूठी तथा हिन्दी की पहली यथार्थवादी कहानी है।

प्रेमचन्दजी ने हिन्दी कहानी को एक नई दिशा दी। चरित्र-चित्रण तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की दृष्टि से प्रेमचंद की कहानियां अद्वितीय हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानियां–बूढ़ी काकी, मंत्र, बड़े घर की बेटी, नशा, पंच परमेश्वर, इस्तीफा, पूस की रात और आत्माराम हैं। प्रेमचंदजी ने राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक सभी समस्याओं पर कहानियां लिखीं तथा खोमचे वाले, तांगे वाले, विद्यार्थी, डॉक्टर, वकील, दुकानदार, बालक, वृद्ध और युवा सबका यथार्थ चित्रण किया।

श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक की 'ताई' तथा राधिकारमण प्रसादजी की 'कानों में कंगना' कहानी विशेष प्रसिद्ध हुई।

1911 ई. में 'इन्दु' में जयशंकर प्रसाद की सर्वप्रथम कहानी 'ग्राम' प्रकाशित हुई। इसी वर्ष जी.पी. श्रीवास्तव की प्रथम कहानी 'पिकनिक' प्रकाशित हुई। इन कहानियों से हिन्दी कहानी को एक नई दिशा मिली। इनके बाद प्रसादजी ने अन्य कई भाव प्रधान कहानियां लिखीं; जैसे–ममता, इन्द्रजाल, पुरस्कार, आकार दीप, स्वर्ग के खण्डहर आदि। अपनी कहानियों में प्रसादजी ने मानव हृदय के द्वन्द्व को बड़ी सफलता से चित्रित किया। इन कहानियों में ऐतिहासिक, यथार्थवादी, मनोवैज्ञानिक, प्रतीकात्मक, प्रेममूलक और भावनात्मक सब प्रकार की कहानियां हैं।

सुदर्शन की 'हार की जीत' कहानी में मानव-चरित्र के सूक्ष्म अन्तःरहस्यों का अनूठा उद्घाटन है। उनकी अन्य कहानियां न्याय मंत्री, अंधेरी दुनियां, कमल की बेटी आदि हैं।

'भिक्षुराज' चतुरसेन शास्त्री की सुन्दर ऐतिहासिक कहानी है। सियारामशरण गुप्त का एक कहानी संग्रह 'मानुषी' है। वृन्दावनलाल वर्मा के तीन कहानी संग्रह हैं–हरसिंगार, दबे पांव और कलाकार का दण्ड। उग्र ने प्राकृतवादी कहानियाँ लिखी हैं।

यशपाल की कहानियाँ मानव-प्रकृति का सूक्ष्म विश्लेषण करती हैं। उनकी शैली यथार्थवादी है, और आर्थिक समस्याओं को उन्होंने अपनी कहानियों की विषयवस्तु बनाया है। उनकी व्यंग्यात्मक शैली बड़ी समर्थ है। यशपालजी के कहानी संग्रह 'पिंजड़े की उड़ान', 'अभिशप्त', 'ज्ञानदान' और 'सच बोलने की भूल' आदि हैं।

भगवती प्रसाद वाजपेयी सामाजिक समस्याओं तथा पारिवारिक जीवन के सुयोग्य शिल्पी हैं। उनकी 'मिठाई वाला' कहानी में सुन्दर मनोवैज्ञानिक चित्रण है। भगवतीचरण वर्मा की कहानियों में यथार्थ का सुन्दर वर्णन मिलता है। उनके दो कहानी संग्रह 'दो बांके' और 'इन्सटालमेंट' हैं। 'प्रायश्चित' उनकी एक सुन्दर कहानी है।

जैनेन्द्रजी, प्रेमचंदजी की परिपाटी में आते हैं। उनके सात कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जैनेन्द्रजी ने अपनी कहानियों के लिए प्रायः सामाजिक और पारिवारिक विषय चुने हैं; परन्तु उनकी कुछ कहानियों में यथार्थ और व्यंग्य का सुघर सम्मिश्रण मिलता है। 'एक रात', 'अपना-अपना भाग्य', 'वातायन', 'नीलम देश की राजकुमारी', 'पाजेब', आदि उनकी उत्कृष्ट कल्पना और भावुकतापूर्ण कहानियां हैं। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की 'नन्दिनी' एक सुन्दर कहानी है। रायकृष्णदास की 'रमणी का रहस्य' एक सुन्दर कहानी है।

अज्ञेयजी वैयक्तिक व सामाजिक समस्याओं के सूक्ष्म निरीक्षक हैं। उनकी कहानियों में समाज पर करारा व्यंग्य मिलता है। इलाचन्द जोशी ने प्रायः मनोवैज्ञानिक सूझ-बूझ की बारीकी के आधार पर जीवन के चित्र उपस्थित किए हैं।

उत्कर्ष काल (1947 से अब तक)–इस काल में देश की बदली हुई परिस्थितियों का प्रभाव कहानी लेखकों पर भी पड़े बिना न रहा। अब राजनैतिक व सामाजिक विषयों के अलावा राष्ट्र निर्माण की योजनाओं को कहानी का विषय बनाया गया। अनेक मनोवैज्ञानिक और मार्क्सवादी कहानियों का प्रणयन भी किया गया। ऐसी कहानियों में या तो प्रतीकों के माध्यम से कुंठाओं की अभिव्यक्ति की गई है, या फिर लेखकों ने शोषक और शोषित वर्ग को कहानी की विषयवस्तु बनाया है। राहुल, रांगेय राघव और गिरीश अष्ठाना मार्क्सवादी विचारधारा के पोषक हैं। चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, इलाचन्द्र जोशी और अज्ञेयजी मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने वाले कहानीकारहैं।

इस काल के अन्य कहानी लेखकों में धर्मवीर भारती, विष्णु प्रभाकर, मार्कण्डेय, रावी, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, राजेन्द्र अवस्थी, नागार्जुन, भीष्म साहनी और श्रीराम शर्मा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

उत्कर्ष काल में कहानी की दो नई विधाओं का जन्म हुआ। इसमें से एक को आंचलिक कहानी कहते हैं और दूसरी को नई कहानी। आंचलिक कहानी वास्तव में किसी विशेष क्षेत्र (अंचल) के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को उभारने का एक सफल प्रयत्न होती है। नई कहानी किसी घटना या विषय की प्रामाणिकता को चित्रित करती है। इस प्रकार के कहानीकारों में मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव तथा कमलेश्वर के नाम उल्लेखनीयहैं।

कहानी के विकास में लेखिकाओं ने भी महत्वपूर्ण योग दिया है। इनमें सुभद्राकुमारी चौहान, तेजरानी पाठक, कमलादेवी चौधरी, उषा देवी मित्रा, होमवती, सत्यवती मलिक, चन्द्रवती, महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, चन्द्रकिरण सोनरिक्सा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सुभद्राकुमारी चौहान की 'कदम्ब के फूल', उषा देवी मित्रा की 'सान्ध्य तारा', सत्यवती मलिक की 'भाई बहन', कमला देवी चौधरी की 'अधूरा चित्र' होमवती देवी की 'मां' और महादेवी वर्मा की 'लछमा' कहानियाँ विशेष प्रसिद्ध हैं।

हिन्दी गद्य की लघु विधाएं

हिन्दी गद्य-साहित्य के प्रारम्भ में जिन विधाओं का विकास हुआ उनमें–कहानी, उपन्यास, निबन्ध, आलोचना आदि का नामोल्लेख आवश्यक है। किन्तु आगे चलकर अन्य विधाएँ प्रचलित हुईं उन्हें भी जानना उतना ही आवश्यक है। ये नवीन विधाएँ हैं–जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, इन्टरव्यू, पत्र-लेखन, अभिनन्दन-ग्रंथ, स्मृति-ग्रंथ, डायरी आदि।

जीवनी

छायावादोत्तर काल में जीवनी-साहित्य का बहुमुखी विकास हुआ है। लोकप्रिय नेताओं, सन्तों, महात्माओं, साहित्यकारों, विदेशी महापुरुषों, वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों आदि से सम्बन्धित जीवनियाँ प्रचुर परिमाण में लिखी गई हैं। महात्मा गाँधी इस युग के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता थे, फलस्वरूप उनसे सम्बन्धित जीवनियाँ सर्वाधिक संख्या में प्राप्त होती हैं। घनश्याम दास बिड़ला, काका कालेलकर, सुमंगल प्रकाश, सुशीला नायर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तथा जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित महात्मा गाँधी की जीवनियाँ उल्लेखनीय हैं। हरिकृष्ण त्रिवेदी, छविनाथ पाण्डेय, गिरीशचन्द्र जोशी आदि ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जीवनियाँ लिखी हैं। जवाहर लाल नेहरू की जीवनी लिखने वालों में माता सेवक पाठक, लक्ष्मण सुमन, जगदीश झा विकल, रामवृक्ष बेनीपुरी, वाल्मीकि चौधरी, इन्द्र विद्या वाचस्पति आदि प्रमुख हैं। कई अन्य लेखकों ने भी राष्ट्र नेताओं से सम्बद्ध प्रेरणास्पद जीवनी-ग्रंथों का प्रणयन किया है। सन्तों-महात्माओं के जीवन-चरित लेखन की दिशा में मदन्त आनन्द कौशल्यायन, सुन्दरलाल, दीनदयाल उपाध्याय और बलदेव उपाध्याय उल्लेखनीय हैं। भारतीय इतिहास से सम्बद्ध महापुरुषों की जीवनी लिखने वालों में सीताराम कोहली, लाजपत राय, द्वारका प्रसाद शर्मा, भीमसेन विद्यालंकार, श्री निवास बालाजी हार्डीकर आदि नाम उल्लेख्य हैं। विदेशी महापुरुषों की जीवनी-भाषा को आधार बनाकर लिखने वालों में बनारसी दास चतुर्वेदी, राम इकबाल सिंह, त्रिलोकीनाथ, अनन्त प्रसाद विद्यार्थी, श्रवण लाल अग्रवाल, राहुल सांकृत्यायन आदि के नाम लिये जा सकते हैं। साहित्यकारों के जीवन-चरित्र को प्रस्तुत करने वालों में गंगा प्रसाद पाण्डेय, शिवरानी देवी, उमेशचन्द्र मिश्र, मदन गोपाल, अमृतराय, डॉ. राम विलास शर्मा, शांति जोशी तथा विष्णु प्रभाकर के नाम उल्लेखनीय हैं। जीवनी साहित्य के संदर्भ में यही कहा जा सकता है कि वर्तमानकालीन जीवनी-साहित्य विषय और परिमाण की दृष्टि से तो पर्याप्त सम्पन्न है लेकिन शैली की दृष्टि से आंशिक समृद्ध हैं। विशेष रूप से ध्यातव्य है कि किसी की जीवनी कोई भी लिख सकता है।

आत्मकथा

जीवनी साहित्य की भाँति आत्मकथा-लेखन की प्रवृत्ति छायावादोत्तर काल में बलवती रही है। सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि विभिन्न क्षेत्रों के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने अपनी आत्मकथाएँ लिखकर इस विधा को पल्लवित-पुष्पित किया है। सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले जिन व्यक्तियों ने आत्मकथाएँ लिखी हैं, उनमें भवानी दयाल संन्यासी तथा सत्यदेव परिव्राजक उल्लेखनीय हैं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू, डॉ. राधा कृष्णन तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद इस युग के ऐसे राजनीतिक महापुरुष रहे हैं जिन्होंने सक्रिय राजनीति में भाग लेने के साथ-साथ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आत्मकथाएँ भी लिखी हैं। हिन्दी के जिन साहित्यकारों की आत्मकथाएँ प्रकाशित हुई हैं उनमें डॉ. श्याम सुन्दर दास, राहुल सांकृत्यायन, वियोगी हरि, यशपाल, शांतिप्रिय द्विवेदी, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, सेठ गोविन्द दास, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, डॉ. हरिवंशराय बच्चन आदि उल्लेखनीय हैं। ध्यातव्य है कि अपने जीवन के विषय में खुद लिखा जाता है तो उसे आत्मकथा कहते हैं।

संस्मरण

स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के सम्बन्ध में लिखित लेख या ग्रंथ को संस्मरण कह सकते हैं। व्यापक रूप से संस्मरण आत्मचरित के अन्तर्गत आ जाता है। परन्तु इन दोनों के दृष्टिकोणों में मौलिक अन्तर है। आत्मचरित के लेखक का मुख्य उद्देश्य अपनी जीवन-कथा का वर्णन करना रहता है। इसमें कथा का प्रमुख पात्र स्वयं लेखक होता है और अन्य इतिहास की घटनाओं तथा परिस्थितियों का केवल वही रूप उसमें आता है, जो उसके जीवनक्रम को प्रभावित, संचालित या नियंत्रित करता है अथवा जो उससे प्रभावित होता है।

इसके विपरीत संस्मरण का दृष्टिकोण अलग है। इसमें लेखक अपने समय के इतिहास को लिखना चाहता है। वह जो स्वयं देखता है, जिसका वह स्वयं अनुभव करता है, उसी का वर्णन करता है। उसके वर्णन में उसकी अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ भी रहती हैं। इस दृष्टि से शैली में वह निबंधकार के समीप है पर वास्तव में वह अपने चतुर्दिक जीवन का सर्जन सम्पूर्ण भावना और जीवन के साथ करता है। रेखाचित्र और संस्मरण में बहुत दूर तक समानता है। जब हम अपने बारे में संस्मरण न लिखकर दूसरों के बारे में लिखते हैं और वह भी संक्षिप्त रूप में तो वह बहुधा रेखाचित्र के समीप होता है। वस्तुतः संस्मरण, रेखाचित्र और आत्मचरित का एक-दूसरे से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक की सीमा दूसरे से कहाँ मिलती है और कहाँ अलग हो जाती है, इसका निर्णय करना कठिन है।

हिन्दी के प्रारम्भिक संस्मरण-लेखकों में पद्मसिंह शर्मा प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त बनारसी दास चतुर्वेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी, शांतिप्रिय द्विवेदी, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, राहुल सांकृत्यायन, जगदीश चन्द्र माथुर, सेठ गोविन्द दास, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर आदि को प्रमुख संस्मरण लेखकों में गिना जाता है। इस कड़ी में हरिवंशराय बच्चन का नामोल्लेख अनिवार्य हो जाता है।

वर्तमान युग में कतिपय अन्य लेखकों ने भी अपनी अमूल्य रचनाओं द्वारा हिन्दी संस्मरण-साहित्य को समृद्ध किया है। इनमें कतिपय उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं—सत्यजीवन शर्मा भारतीय, हरिभाऊ उपाध्याय, रायकृष्णदास, महेन्द्र भटनागर, कुंतल गोयन, डॉ. हर गुलाल, पदमिनी मेनन और लक्ष्मी नारायण सुधांशु आदि।

रेखाचित्र

रेखाचित्र अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का पर्याय है जिसे हिन्दी में शब्दचित्र भी कहते हैं। जो चित्र रेखा द्वारा खींचे जाते हैं उन्हें हम रेखाचित्र कहते हैं। साहित्य में रेखा का काम शब्दों से लिया जाता है। शिवदान सिंह चौहान ने रेखाचित्र के विषय में कहा है—रेखाचित्र पढ़कर किसी वस्तु का चित्र ही हमारे सामने नहीं खिंच जाता, बल्कि अभिव्यक्ति और चित्रण के पीछे अनासक्तिभाव का उपक्रम किये लेखक की छिपी सहानुभूति से भी अप्रत्यक्ष रूप से पाठक प्रभावित होता है, वास्तविकता के उस टुकड़े को उस विराट् संदर्भ से हटाकर जैसे खुर्दबीन से देखकर वह उसे पूरी तौर पर जान लेता है और उसके सम्पूर्ण स्वरूप से उसके आंतरिक सम्बन्धों को पहचान लेता है।

छायावादोत्तर साहित्य में रेखाचित्र-साहित्य के विकास की दिशा में 'हँस' पत्रिका का रेखाचित्र विशेषांक सर्वप्रथम उल्लेखनीय है। इसमें हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के लेखकों के भी रेखाचित्र प्रकाशित किए गए थे। इन विधाओं के हिन्दी लेखकों में बनारसी दास चतुर्वेदी का स्थान सर्वोच्च है। रेखाचित्र लेखकों में प्रकाश चन्द्र गुप्त, विनय मोहन शर्मा, कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर, शिवपूजन सहाय, सत्यवती मल्लिक, शांतिप्रिय द्विवेदी, सेठ गोविन्ददास, जगदीश चन्द्र माथुर आदि नाम उल्लेख्य हैं।

रेखा चित्र संस्मरणात्मक भी होते हैं। हिन्दी में संस्मरणात्मक रेखाचित्र को उन्नत करने वालों में सत्यजीवन वर्मा, ओंकार शरद, प्रेमनारायण टण्डन, विनोद शंकर व्यास, हरिभाऊ उपाध्याय, राम कृष्ण दास, महेन्द्र भटनागर, कुन्ताव गोयल, डॉ. हरगुलाल, पदमिनी मेनन, लक्ष्मी नारायण सुधांशु , इन्द्र विद्यावाचस्पति आदि प्रमुख हैं।

यात्रा-साहित्य

यात्राओं के वर्णन को साहित्य के रंग से रंजित कर रोचक बनाने वाली रचना को 'यात्रावृत्त' नाम दिया गया। यह इतना रोचक हो गया कि साहित्य की एक विधा के रूप में इसे स्वीकृत कर लिया गया। पाठक को यात्रावृत्त से कहानी और उपन्यास का आनन्द मिलने लगा।

छायावादोत्तर काल में स्वामी सत्यदेव परिव्राजक की कृति 'मेरी पाँचवी जर्मनी यात्रा' से यात्रावृत्त का क्रम प्रारम्भ होता है। कन्हैया लाल मिश्र की भी एक रचना 'मेरी इराक यात्रा' इसी समय प्रकाशित हुई, जिसमें यात्रा मार्ग में पड़ने वाले स्थानों का भी सविस्तार वर्णन किया गया।

यात्रावृत्त को समृद्ध बनाने में राहुल सांकृत्यायन का योगदान अविस्मरणीय है। 'मेरी लद्दाख यात्रा,' 'किन्नर देश में' 'राहुल यात्रावली' 'यात्रा के पन्ने' 'रूस में पच्चीस मास', 'एशिया के दुर्गम भूखण्डों में' आदि उनकी कतिपय उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'पैरों में पंख बाँधकर' तथा 'उड़ते चलो उड़ते चलो' के माध्यम से यूरोपीय रंगमंच, देहात आदि का हृदयग्राही विवरण अंकित किया है।

यात्रावृत्त का महत्त्व दो कारणों से हैं। एक तो यात्रा के बीच में जहाँ-जहाँ हम रुकते हैं, नए-नए दृश्य देखते हैं और नया-नया अनुभव प्राप्त करते हैं। दूसरे, साहित्यिक भाषा और शैली में वर्णन अत्यन्त रोचक हो जाता है। यात्रावृत्त किसी कहानी या उपन्यास से कम रोचक नहीं होता है। यही कारण है कि साहित्य में इसे विधा के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। इतना ही नहीं आजकल यह साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है।

गद्य काव्य

'गद्यकाव्य' से अभिप्राय उस रचना से है, जिसमें वैयक्तिक आशा-निराशा, सुख-दुख आदि घनीभूत भावनाओं को साधारण गद्य से भिन्न भावपूर्ण गद्य में व्यक्त किया जाता है—उसमें संवेदनशीलता एवं रसात्मकता तो छंदोबद्ध काव्य के समान होती है, किंतु माध्यम गद्य ओता है। हिंदी में इस प्रकार की रचनाएं रवींद्रनाथ ठाकुर की प्रसिद्ध कृति 'गीतांजलि' के प्रभाव स्वरूप लिखीं गयीं। राय कृष्णदास (1892-1980), वियोगी हरि (1896-1988), चतुरसेन शास्त्री (1891-1960), दिनेशनंदिनी चौरड्या (1915-2006), माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968) और डॉ. रघुवीर सिंह (1908-1991) इस विधा के मुख्य कृतिकार हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी साहित्य में गद्य का विकास–
A. पद्य के साथ-साथ हुआ
B. पद्य से पहले हुआ
C. पद्य के बाद हुआ
D. उपरोक्त में से कोई नहीं

2. आधुनिक काल में कुल मिलाकर–
A. पद्य और गद्य बराबर लिखा गया
B. पद्य अधिक लिखा गया
C. गद्य अधिक लिखा गया
D. उपरोक्त में से कोई नहीं

3. हिन्दी में गद्य का प्राचीनतम रूप किस ग्रंथ में मिलता है?
A. चौरासी वैष्णवन की वार्ता B. चन्द छंद बरनन की महिमा
C. पद्मपुराण D. सुख सागर

4. 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' का रचयिता कौन था?
A. विट्ठलनाथ जी B. गोकुलनाथ जी
C. नाभादास जी D. गंग कवि

5. 'अष्टयाम' किसकी रचना है?
A. गोकुलनाथ जी B. विट्ठलनाथ जी
C. नाभादास जी D. रामप्रसाद निरंजनी

6. प्रारम्भिक गद्य की भाषा क्या थी?
A. अपभ्रंश B. खड़ी बोली
C. अवधी D. ब्रजभाषा

7. जैन 'पद्म पुराण' का अनुवाद किसने किया था?
A. लक्ष्मण सिंह B. दौलत राम
C. श्रद्धाराम फिल्लौरी D. रामप्रसाद निरंजनी

8. 19वीं शताब्दी के आरम्भ में हिन्दी गद्य के चार मुख्य लेखक हुए। उनमें से एक ने 'सुखसागर' लिखा। उसका नाम क्या था?
A. सदल मिश्र B. लल्लू लाल
C. सदासुख लाल D. इंशाअल्ला खां

9. 'रानी केतकी की कहानी' किसने लिखी थी?
A. इंशाअल्ला खां B. लक्ष्मण सिंह
C. बालकृष्ण भट्ट D. प्रताप नारायण मिश्र

10. नीचे पुस्तकों और लेखकों के जोड़े दिये गए हैं। इनमें एक जोड़ा गलत है। बताइये कौन-सा जोड़ा गलत है?
A. भाषा योगवशिष्ट – नाभादास
B. नासिकेतोपाख्यान – सदल मिश्र
C. श्रृंगार रस मंडन – विट्ठल नाथ
D. प्रेमसागर – लल्लू लाल

11. ईसाई पादरियों ने किस प्रकार हिन्दी गद्य के प्रसार में योगदान किया?
A. उन्होंने गद्य लेखन पर पुरस्कार दिये
B. स्वयं हिन्दी गद्य में लिखा
C. बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद कराया और उसे बांटा
D. उपरोक्त सभी

12. 'सितारे हिन्द' किसकी उपाधि थी?
A. राजा शिवप्रसाद B. राजा लक्ष्मण सिंह
C. देवकीनंदन खत्री D. श्रीनिवास दास

13. 'इतिहास तिमिर नाशक' ग्रंथ का रचयिता कौन है?
A. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
B. बालकृष्ण भट्ट
C. राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द'
D. राजा लक्ष्मण सिंह

14. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय में हिन्दी गद्य की बड़ी उन्नति हुई। इसमें इनके दो सहयोगियों की प्रमुख भूमिका थी, जिनमें एक का नाम था प्रतापनारायण मिश्र और दूसरे का नाम था–
A. देवकीनंदन खत्री B. श्यामसुंदर दास
C. श्रीनिवास दास D. बालकृष्ण भट्ट

15. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काल में हिन्दी गद्य में–
A. नाटक लिखे गये B. निबंध लिखे गये
C. आलोचना लिखी गई D. उपरोक्त तीनों लिखे गये

16. द्विवेदी युग में हिन्दी गद्य–
A. का रूप पूर्णतः स्थिर हो गया
B. उर्दू मिश्रित हो गया
C. की उपेक्षा हुई
D. में केवल कुछ कहानियां लिखी गईं

17. द्विवेदी-युग में रामचन्द्र शुक्ल ने साहित्य के किस क्षेत्र में मूल्यवान योगदान किया?
A. उपन्यास के क्षेत्र में B. कहानी के क्षेत्र में
C. नाटक के क्षेत्र में D. आलोचना के क्षेत्र में

18. मिश्र बंधु का योगदान गद्य के किस क्षेत्र में रहा?
A. नाटक के क्षेत्र में B. कहानी के क्षेत्र में
C. आलोचना के क्षेत्र में D. उपन्यास के क्षेत्र में

19. द्विवेदी युग में ही हिन्दी के महान् उपन्यासकार की रचनायें प्रकाश में आईं। वह उपन्यासकार थे–
A. जैनेन्द्र कुमार B. यशपाल
C. प्रेमचन्द D. इलाचन्द जोशी

20. छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद ने गद्य की किस विधा को समृद्ध बनाया?
A. नाटक B. उपन्यास
C. निबन्ध D. कहानी

21. छायावादी कवि निराला का प्रसिद्ध उपन्यास है–
A. अलका B. चन्द्रकला
C. सावित्री D. इन्द्रा

22. महादेवी वर्मा की रचना 'अतीत के चलचित्र'–
A. कहानी संग्रह है B. उपन्यास है
C. निबन्ध-संग्रह है D. संस्मरणों का संग्रह है

23. 'भारत दुर्दशा' नाटक का लेखक कौन है?
A. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र B. देवकीनंदन खत्री
C. बालकृष्ण भट्ट D. प्रतापनारायण मिश्र

24. 'चन्द्रकान्ता संतति' उपन्यास के कितने खण्ड निकले थे?
A. 14 खण्ड B. 8 खण्ड
C. 3 खण्ड D. 24 खण्ड

25. तिलिस्म और ऐयारी से भरे 'चंद्रकान्ता संतति' उपन्यास का सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि–
A. उपन्यास के नए क्षेत्र खुल गए
B. हिन्दी गद्य का रूप निखर गया
C. इसी किस्म के बहुत-से उपन्यास लिखे गये
D. असंख्य लोगों ने इस उपन्यास को पढ़ने के लिए हिन्दी भाषा सीखी

26. मुंशी प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास में मुख्य पात्र (हीरो) का नाम क्या है?
A. मधुवा B. होरी
C. विशाल देव D. दिव्या

27. निराला के उपन्यास 'निरूपमा' में किस समस्या का वर्णन है?
A. ग्राम्य-जीवन की वास्तविकतायें
B. दहेज प्रथा
C. मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक विपन्नता
D. प्रादेशिक भेदभाव और सामाजिक कुरीतियां

28. कुछ विद्वान 'परीक्षा गुरु' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। इसके लेखक हैं–
A. रामचन्द्र शुक्ल B. श्रीनिवास दास
C. बालकृष्ण भट्ट D. बाबू राधाकृष्ण दास

29. बालकृष्ण भट्ट का उपन्यास 'सौ अजान एक सुजान' कैसा उपन्यास है?
A. सांस्कृतिक B. ऐतिहासिक
C. तिलिस्मी D. उपदेशात्मक

30. निम्नलिखित उपन्यासों में से कौन-सा उपन्यास अम्बिकादत्त व्यास का है?
A. नूतन ब्रह्मचारी B. मरता क्या न करता
C. मृण्मयी D. आश्चर्य वृतान्त

31. उपन्यासों के विकास के प्रारम्भिक चरण के सम्बन्ध में कौन-सा कथन सही है?
A. कुछ उपन्यास मौलिक हैं
B. कुछ उपन्यास अनूदित हैं
C. इनका लाभ यह हुआ कि मौलिक उपन्यास लेखन की प्रवृति बढ़ी
D. उपरोक्त सभी

32. निम्नलिखित उपन्यासों में से कौन-सा उपन्यास अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का नहीं है?
A. वेनिस का बाँका B. ठेठ हिन्दी का ठाठ
C. अधलिखा फूल D. रसिक लाल

33. हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यासकारों में देवकीनंदन खत्री विख्यात हैं। इनका सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यास 'चन्द्रकान्ता संतति' है। इसके अलावा भी इनका एक अन्य उपन्यास है, जिसका नाम है–
A. अंगूठी का नगीना B. भूतनाथ
C. दिल्ली के दलाल D. युगान्तर

34. 'संन्यासी' एक प्रसिद्ध उपन्यास है। इसके लेखक का नाम है–
A. वृन्दावनलाल वर्मा B. यशपाल
C. उपेन्द्रनाथ अश्क D. इलाचन्द्र जोशी

35. निम्नलिखित उपन्यासों में से कौन-सा उपन्यास यशपालजी का नहीं है?
A. दादा कामरेड B. दिव्या
C. देशद्रोही D. भिखारिणी

36. किसको 'उपन्यास सम्राट' माना जाता है?
A. जैनेन्द्र कुमार B. यशपाल
C. उपेन्द्रनाथ अश्क D. प्रेमचंद

37. 'चित्रलेखा' एक अति लोकप्रिय उपन्यास है। इसके लेखक का नाम है–
A. चतुरसेन शास्त्री B. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
C. वृन्दावनलाल वर्मा D. भगवतीचरण वर्मा

38. जयशंकर प्रसाद के दो उपन्यासों में एक का नाम 'कंकाल' है, और दूसरे का–
A. तीन वर्ष B. मां
C. तितली D. वैशाली की नगरवधू

39. मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास–
A. ऐतिहासिक हैं B. सामाजिक हैं
C. रोमांटिक हैं D. मनोवैज्ञानिक हैं

40. निम्नलिखित उपन्यासों में से कौन-सा उपन्यास प्रेमचंदजी का नहीं है?
A. गबन B. निर्मला
C. गोदान D. विसर्जन

41. 'वैशाली की नगरवधू' किसका उपन्यास है?
A. जैनेन्द्र कुमार B. चतुरसेन शास्त्री
C. वृन्दावनलाल वर्मा D. इलाचन्द्र जोशी

42. ऐतिहासिक उपन्यासों के लिए कौन-सा नाम विख्यात है?
A. यशपाल B. अज्ञेय
C. उपेन्द्रनाथ अश्क D. वृन्दावनलाल वर्मा

43. 'शेखर-एक जीवनी' किसका बहुचर्चित उपन्यास है?
A. राहुल सांकृत्यायन B. धर्मवीर भारती
C. अमृतलाल नागर D. अज्ञेय

44. नीचे कुछ उपन्यासों और उनके लेखकों के नामों के जोड़े दिये गए हैं। इनमें से कौन-सा जोड़ा सही नहीं है?
A. जयशंकर प्रसाद – तितली
B. देवकीनंदन खत्री – भूतनाथ
C. जैनेन्द्र कुमार – सुनीता
D. अज्ञेय – दिव्या

45. 'मैला आँचल' उपन्यास का लेखक कौन है?
A. फणीश्वरनाथ रेणु B. धर्मवीर भारती
C. अज्ञेय D. नरेश मेहता

46. 'शेखर-एक जीवनी' अज्ञेय का लिखा हुआ उपन्यास है। यह–
A. अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए विख्यात है
B. अपने सांस्कृतिक मूल्यों के लिए विख्यात है
C. नवीन शैली व पैनी मनोवैज्ञानिक दृष्टि के लिए विख्यात है
D. सामाजिक कुरीतियों का पर्दाफाश करने के लिए विख्यात है

47. प्रेमचन्द जी के 'गोदान' में–
A. जीवन के जीते-जागते चित्र हैं
B. जीवन की कठोर वास्तविकता का सूक्ष्म विवेचन है
C. ग्राम-जीवन की रीतियों का सूक्ष्म विवेचन है
D. उपरोक्त सभी

48. प्रसादजी के 'कंकाल' उपन्यास में–
A. सामाजिक बंधनों की विषमता और व्यक्ति की सहज प्रवृत्तियों का संघर्ष अंकित है
B. समाज-व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य है
C. आदर्श और यथार्थ के बीच खड़ी खाई का रूप है
D. उपरोक्त सभी

49. निम्नलिखित में कौन-सा एक उपन्यास वृन्दावनलाल वर्मा का नहीं है?
A. गढ़ कुण्डार B. झांसी की रानी
C. विराटा की पद्मिनी D. देशद्रोही

50. 'बूंद और समुद्र' किसका विख्यात उपन्यास है?
A. उदय शंकर भट्ट B. फणीश्वरनाथ रेणु
C. शैलेश मटियानी D. अमृतलाल नागर

51. निम्नलिखित आंचलिक उपन्यासों में से एक फणीश्वरनाथ रेणु का नहीं है। वह है–
A. मैला आँचल B. परती परिकथा
C. द्वामा D. पल्टू बाबू रोड

52. 'चिट्ठीरसैनी' किसका प्रसिद्ध उपन्यास है?
A. उपेन्द्रनाथ अश्क B. हरिकृष्ण प्रेमी
C. शैलेश मटियानी D. यशपाल

53. 'चित्रलेखा' और 'तीन वर्ष' के अतिरिक्त भगवतीचरण वर्मा के अन्य उपन्यास हैं–
A. टेढ़े-मेढ़े रास्ते B. भूले-बिसरे चित्र
C. सीधी-सच्ची बातें D. उपरोक्त सभी

54. 'गिरती दीवारें' किसका उत्तम उपन्यास है?
A. उपेन्द्रनाथ अश्क B. धर्मवीर भारती
C. अमृतलाल नागर D. नागार्जुन

55. 'मृगनयनी' किसका उपन्यास है?
A. जैनेन्द्र कुमार का B. वृन्दावनलाल वर्मा का
C. अमृतलाल नागर का D. उपरोक्त में से कोई नहीं

56. निम्नलिखित सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(*a*) अपने-अपने अजनबी	1. धर्मवीर भारती
(*b*) सूरज का सातवां घोड़ा	2. अज्ञेय
(*c*) खाली कुर्सी की आत्मा	3. इलाचंद जोशी
(*d*) प्रेत और छाया	4. लक्ष्मीकान्त वर्मा

कूट :

	(*a*)	(*b*)	(*c*)	(*d*)
A.	2	1	4	3
B.	1	2	4	3
C.	1	2	3	4
D.	3	4	2	1

57. हरिवंश राय बच्चन की रचना ''क्या भूलूं क्या याद करूं'' किस कोटि के अन्तर्गत आती है?
A. आत्मकथा B. यात्रा वृत्तान्त
C. इंटरव्यू D. रेखाचित्र

58. महादेवी वर्मा की रचना 'पथ के साथी' किस कोटि के अन्तर्गत आती है?
A. संस्मरण B. रेखाचित्र
C. यात्रा वृत्तान्त D. जीवनी

59. नीचे कुछ रचनायें दी हुई हैं और उनके सामने उनके लेखकों के नाम हैं। कौन-सा जोड़ा गलत है?
A. अरे यायावर याद रहेगा – अज्ञेय
B. मैं इनसे मिला – पद्मसिंह शर्मा कमलेश
C. जंजीरें और दीवार – रामवृक्ष बेनीपुरी
D. माटी हो गई सोना – महादेवी वर्मा

60. धर्मवीर भारती की रचना 'ठेले पर हिमालय' किस कोटि की है?
A. जीवनी B. यात्रा वृत्तान्त
C. संस्मरण D. इंटरव्यू

61. 'एक बूंद सहसा उछली' किसका विख्यात यात्रा संस्मरण है?
A. निर्मल वर्मा का B. रामवृक्ष बेनीपुरी का
C. अज्ञेय का D. डा. रघुवंश का

62. हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी किसे माना जाता है?
A. इन्दुमती
B. आकाशदीप
C. ग्यारह वर्ष का समय
D. उसने कहा था

63. हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी 'इन्दुमती' का लेखक कौन था?
A. गिरिजादत्त वाजपेयी
B. किशोरी लाल गोस्वामी
C. रामचन्द्र शुक्ल
D. प्रताप नारायण मिश्र

64. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की सुविख्यात कहानी कौन-सी है?
A. छाया
B. उसने कहा था
C. बड़े घर की बेटी
D. शतरंज के खिलाड़ी

65. प्रेमचंद का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास कौन-सा है?
A. निर्मला
B. सेवासदन
C. रंगभूमि
D. गोदान

66. मुंशी प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में किस समस्या को प्रस्तुत किया है?
A. विधवा विवाह
B. अनमेल विवाह
C. दहेज प्रथा
D. उपरोक्त तीनों

67. 'मधुआ' कहानी किसकी है?
A. प्रेमचन्द की
B. प्रसादजी की
C. यशपाल की
D. अज्ञेय की

68. 'जार्ज पंचम की नाक' कहानी का लेखक कौन है?
A. कमलेश्वर
B. हरिकृष्ण प्रेमी
C. भीष्म साहनी
D. अज्ञेय

69. प्रेमचंद की 'पूस की रात' कहानी–
A. भारतीय किसान की टूटन की कहानी है
B. भारतीय मध्यवर्ग के मिथ्याभिमान की कहानी है
C. वर्ग संघर्ष की कहानी है
D. अशिक्षा के अभिशाप की कहानी है

70. प्रसादजी की मधुआ कहानी एक–
A. शराबी के हृदय-परिवर्तन की कहानी है
B. रईस की हृदयहीनता की कहानी है
C. बालक के शोषण की कहानी है
D. उपरोक्त में से कोई नहीं

71. यशपाल ने अपनी कहानी 'खच्चर और आदमी' में क्या बताया है?
A. खच्चर आदमी से श्रेष्ठ है
B. आदमी खच्चर से श्रेष्ठ है
C. जो अपने को परिस्थितियों में ढाल ले वही बच पाता है
D. मनुष्य परिस्थितियों का दास है

72. अज्ञेय की 'शरणदाता' कहानी–
A. मानव संघर्ष की कहानी है
B. साम्प्रदायिकता-विरोधी कहानी है
C. नारी ममता की कहानी है
D. उपरोक्त तीनों

73. 'कानों में कंगना' नामक कहानी का लेखक कौन है?
A. विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'
B. राधिकारमण प्रसाद
C. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
D. रायकृष्ण दास

74. 'ताई' कहानी का लेखक कौन है?
A. वृन्दावनलाल वर्मा
B. राजेन्द्र यादव
C. मन्नू भंडारी
D. विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'

75. निम्नलिखित कहानियों में से कौन-सी कहानी उषा देवी मित्रा की लिखी हुई है?
A. भाई-बहन
B. लछमा
C. अधूरा चित्र
D. सान्ध्य तारा

76. 'आत्माराम' और 'पंच परमेश्वर' किसकी कहानियां हैं?
A. सुदर्शन
B. शिवपूजन सहाय
C. चंडी प्रसाद 'हृदयेश'
D. प्रेमचंद

77. गिरिजादत्त वाजपेयी की एक उत्तम कहानी है–
A. रानी सारंधा
B. प्रतिध्वनि
C. हार की जीत
D. पंडित और पंडितानी

78. 'पुरस्कार' और 'आकाशदीप' कहानियां किसकी हैं?
A. रायकृष्ण दास
B. सुदर्शन
C. चन्द्रकिरण सौनरिक्सा
D. जयशंकर प्रसाद

79. 'हार की जीत' नामक अत्यन्त लोकप्रिय और महान् चरित्र वाली कहानी का लेखक कौन है?
A. सुदर्शन
B. चतुरसेन शास्त्री
C. विष्णु प्रभाकर
D. यशपाल

80. गुलेरीजी की 'उसने कहा था' कहानी का सार क्या है?
A. अमृतसर का जन-जीवन
B. युद्ध की निस्सारता
C. निःस्वार्थ बलिदान
D. अपराध का मनोविज्ञान

81. 'बैताल पचीसी' और 'सिंहासनबत्तीसी' कहानियों को हिन्दी में किसने अनूदित किया?
A. लल्लू लाल
B. शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द'
C. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
D. उपरोक्त में से कोई नहीं

82. 'रानी केतकी की कहानी' कहानी के बारे में कौन-सा कथन सही नहीं है?
A. यह कहानी ठेठ हिन्दी में है
B. इसमें रानी केतकी और उदयभान की प्रेम-कथा का वर्णन है
C. इसके लेखक सदल मिश्र हैं
D. इसके लेखक इंशाअल्ला खां हैं

83. 'राजा भोज का सपना' किसकी कहानी है?
A. शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द'
B. चतुरसेन शास्त्री
C. उषा देवी मित्रा
D. सुदर्शन

84. मनोवैज्ञानिक कहानीकारों में किसकी गणना नहीं की जाती?
A. राजेन्द्र यादव
B. अज्ञेय
C. इलाचन्द्र जोशी
D. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

85. जैनेन्द्रजी कहानी के सम्बन्ध में प्रेमचंद की परिपाटी में आते हैं; क्योंकि उन्होंने अपनी कहानियों के लिए
A. मनोवैज्ञानिक विषय चुने
B. सामाजिक और पारिवारिक विषय चुने
C. राष्ट्र निर्माण के विषयों को अपनाया
D. उपरोक्त तीनों

86. 'मिठाई वाला' कहानी का लेखक कौन है?
A. भगवतीचरण वर्मा B. भगवती प्रसाद वाजपेयी
C. यशपाल D. सुदर्शन

87. निम्नलिखित कहानियों में से कौन-सी कहानी रायकृष्ण दास की है?
A. रमणी का रहस्य B. अपना-अपना भाग्य
C. नन्दिनी D. कमल की बेटी

88. प्रसाद जी की प्रथम कहानी कौन-सी थी?
A. ग्राम B. मधुआ
C. आकाशदीप D. पुरस्कार

89. निम्नलिखित में से कौन-सा कहानी संग्रह प्रसाद जी का नहीं है?
A. छाया B. आकाशदीप
C. कोठरी की बात D. प्रतिध्वनि

90. 'रक्षा बन्धन' किसकी कहानी है?
A. शिवपूजन सहाय की B. जैनेन्द्र की
C. सुदर्शन की D. कौशिक की

91. निम्नलिखित में से कौन-सा कहानी संग्रह वृन्दावनलाल वर्मा का नहीं है?
A. हर सिंगार B. दबे पांव
C. कलाकार का दण्ड D. मानुषी

92. 'नई कहानी' वर्ग के कहानीकारों में निम्न में से किसका नाम नहीं आता?
A. मोहन राकेश का B. राजेन्द्र यादव का
C. कमलेश्वर का D. विष्णु प्रभाकर का

93. 'दुलाई वाली' कहानी किसकी थी?
A. रामचन्द्र शुक्ल की
B. विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' की
C. प्रेमचंद की
D. वंग महिला की

94. कहानी के विकास-क्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली पत्रिका का नाम है–
A. सरस्वती B. इन्दु
C. उपरोक्त दोनों D. इन्दुमती

95. जैनेन्द्रजी का चिन्तन एवं दृष्टिकोण–
A. गांधीवादी B. प्रगतिशील
C. यथार्थवादी D. साम्यवादी

96. आंचलिक कहानी संग्रह 'ठुमरी' किसका है?
A. उपेन्द्र नाथ 'अश्क' B. शैलेश मटियानी
C. रघुवीर सहाय D. फणीश्वर नाथ 'रेणु'

97. विष्णु प्रभाकर की 'अधूरी कहानी' का उद्देश्य–
A. साम्प्रदायिक सद्भाव है B. नारी-उत्थान है
C. कुंठा-उन्मूलन है D. अहंकार का पतन है

98. 'काकी' कहानी किसकी है?
A. सुदर्शन B. कौशिक
C. सियारामशरण गुप्त D. प्रेमचन्द

99. 'परदा' कहानी में यशपालजी का उद्देश्य–
A. मध्यम वर्ग की निर्धनता का वर्णन करना है
B. उन्माद की निंदा करना है
C. झूठी प्रतिष्ठाप्रियता की पोल खोलना है
D. परदा-प्रथा की बुराइयां बताना है

100. 'दो बांके' किसका कहानी संग्रह है?
A. भगवती प्रसाद वाजपेयी B. भगवतीचरण वर्मा
C. मन्नू भंडारी D. होमवती देवी

101. कालिदास के 'शकुन्तला' नाटक का हिन्दी अनुवाद किसने किया?
A. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र B. राजा लक्ष्मण सिंह
C. बाबू गोपाल चन्द्र D. प्रताप नारायण मिश्र

102. निम्नलिखित नाटकों में से कौन-सा नाटक भारतेन्दुजी द्वारा लिखित नहीं है?
A. भारत दुर्दशा B. भारत-सौभाग्य
C. नील देवी D. अन्धेर नगरी

103. भारतेन्दुजी के 'चन्द्रावली' नाटक में–
A. भारत की दयनीय दशा का चित्रण है
B. शासन-व्यवस्था पर व्यंग्य है
C. आदर्श प्रेम का चित्रण है
D. ऐतिहासिक खोज है

104. 'दुखिनी बाला' किसका नाटक है?
A. भारतेन्दु बाबू B. राधाकृष्ण दास
C. प्रतापनारायण मिश्र D. अम्बिकादत्त व्यास

105. द्विवेदी युग में–
A. मौलिक नाटक खूब लिखे गए
B. नाटकों के अनुवाद खूब हुए
C. नाटकों का मनुष्य के जीवन में निकट का सम्बन्ध रहा
D. उपरोक्त सभी

106. द्विजेन्द्र लाल राय के बंगला नाटकों का हिन्दी अनुवाद किसने किया?
A. श्रीनिवास दास B. बाबू सीताराम
C. सत्य नारायण D. रूप नारायण

107. प्रसाद युग से पूर्व मैथिलीशरण गुप्त का कौन-सा नाटक आया था?
A. चन्द्रगुप्त B. चन्द्रहास
C. चन्द्रकला D. चन्द्रोदय

108. प्रसादजी के नाटकों में–
A. साहित्यिक भाषा है
B. ऐतिहासिक पुट है
C. भारतीय सभ्यता और संस्कृति के गौरव का चित्रण है
D. उपरोक्त सभी

109. निम्नलिखित नाटकों में से कौन-सा नाटक प्रसादजी द्वारा लिखित नहीं है?
A. राज्यश्री B. स्कन्दगुप्त
C. अजातशत्रु D. विश्वामित्र

110. उदयशंकर भट्टजी के नाटक–
A. राष्ट्रीयता प्रधान हैं B. पौराणिक हैं
C. ऐतिहासिक हैं D. अन्तर्द्वन्द्व प्रधान हैं

111. 'अम्बा' और 'मतस्यगंधा' किसके नाटक हैं?
A. हरिकृष्ण प्रेमी
B. विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'
C. सुदर्शन
D. उदय शंकर भट्ट

112. 'सिन्दूर की होली' किसका विख्यात नाटक है?
A. लक्ष्मीनारायण मिश्र B. उपेन्द्रनाथ अश्क
C. सेठ गोविन्द दास D. माखनलाल चतुर्वेदी

113. मोहन राकेश की ख्याति किस नाटक से फैली?
A. शशिगुप्त B. कर्तव्य
C. आषाढ़ का एक दिन D. रेशमी टाई

114. निम्नलिखित में से कौन-सा नाटक लक्ष्मी नारायण लाल का नहीं है?
A. अंधा कुआं B. मादा कैक्टस
C. सूखा सरोवर D. लहरों का राजहंस

115. हिन्दी का प्रथम एकांकी नाटककार कौन था?
A. प्रसादजी B. रामकुमार वर्मा
C. भगवतीचरण वर्मा D. उपेन्द्र नाथ अश्क

116. हिन्दी का सर्वप्रथम एकांकी नाटक किसे माना जाता है?
A. बड़ा आदमी B. एक बूंद
C. कारवां D. दस मिनट

117. 'देवताओं की छाया में' किसका एकांकी-संग्रह है?
A. उपेन्द्रनाथ अश्क B. रामकुमार वर्मा
C. भुवनेश्वर मिश्र D. सेठ गोविन्द दास

118. 'सबसे बड़ा आदमी' किसका एकांकी है?
A. भगवतीचरण वर्मा B. विष्णु प्रभाकर
C. जगदीश चन्द्र माथुर D. उदय शंकर भट्ट

119. 'गरुड़ध्वज' और 'दशाश्वमेध' किसके विख्यात ऐतिहासिक नाटक हैं?
A. रामकुमार वर्मा B. हरिकृष्ण प्रेमी
C. उपेन्द्रनाथ अश्क D. लक्ष्मीनारायण मिश्र

120. 'युगे-युगे क्रान्ति' नाटक किसका है?
A. जगदीशचन्द्र माथुर B. सेठ गोविन्द दास
C. विष्णु प्रभाकर D. देवराज दिनेश

121. जगदीश चन्द्र माथुर का एकांकी संकलन है–
A. कुलीनता B. रंगमंच
C. भोर का तारा D. मां का बेटा

122. 'आधे-अधूरे' किसका नाटक है?
A. नरेश मेहता B. देवराज दिनेश
C. विपिन अग्रवाल D. मोहन राकेश

123. निम्नलिखित नाटकों में से कौन-सा लक्ष्मीकांत वर्मा का है?
A. आदमी का जहर B. तीन अपाहिज
C. नया-पुराना D. उपरोक्त में से कोई नहीं

124. 'पृथ्वीराज की आँखें' और 'कैलेण्डर का आखिरी पन्ना' किसके विख्यात एकांकी हैं?
A. सेठ गोविन्द दास B. विष्णु प्रभाकर
C. रामकुमार वर्मा D. उदय शंकर भट्ट

125. सेठ गोविन्द दास के एकांकियों में–
A. गांधीवादी विचारधारा है
B. राजनैतिक एवं सामाजिक समस्याओं का चित्रण है
C. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है
D. उपरोक्त (A) और (B) दोनों

126. सेठ गोविन्ददास के प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं–
A. नवरस B. एकादशी
C. स्पर्द्धा D. उपरोक्त तीनों

127. उदय शंकर भट्ट के एकांकियों में–
A. मनोविश्लेषणात्मक शैली है
B. अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण है
C. भाषा पात्रों के अनुकूल है
D. उपरोक्त तीनों

128. 'एकला चलो रे' किसका विख्यात एकांकी है?
A. उदय शंकर भट्ट B. हरिकृष्ण प्रेमी
C. उपेन्द्र नाथ अश्क D. विष्णु प्रभाकर

129. 'अधिकार का रक्षक' और 'लक्ष्मी का स्वागत' किसके विख्यात एकांकी हैं?
A. हरिकृष्ण प्रेमी B. रेवती शरण शर्मा
C. धर्मवीर भारती D. उपेन्द्र नाथ अश्क

130. लोकप्रिय एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' किसकी रचना है?
A. गिरजा कुमार माथुर B. लक्ष्मीकान्त वर्मा
C. भारत भूषण अग्रवाल D. जगदीश चन्द्र माथुर

131. 'मुझे जीने दो' किसका लोकप्रिय एकांकी है?
A. लक्ष्मीकान्त मिश्र B. जयनाथ नलिन
C. रेवती शरण शर्मा D. उपरोक्त में से कोई नहीं

132. 'लस्सी का गिलास' एकांकी का लेखक कौन है?
A. सद्‌गुरु शरण अवस्थी B. विष्णु प्रभाकर
C. जयनाथ नलिन D. विनोद रस्तोगी

133. निम्नलिखित में से कौन-सा एकांकी विमला लूथरा का नहीं है?
A. लाइन क्लीअर B. मुन्ने का नामकरण
C. प्रीतिभोज D. डाक्टर बीबी

134. 'रसोईघर में प्रजातंत्र' विष्णु प्रभाकर का एकांकी है, जिसमें–
A. व्यंग्य है B. क्षोभ है
C. उद्‌बोधन है D. निराशा है

135. निम्नलिखित में से किसे हिन्दी का सशक्त नाटककार माना जाता है?
A. मुंशी प्रेमचंद B. सेठ गोविन्द दास
C. जयशंकर प्रसाद D. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

136. 'विशाख' और 'एक घूंट' नाटकों का लेखक कौन है?
A. हरिकृष्ण प्रेमी B. लक्ष्मी नारायण लाल
C. जयशंकर प्रसाद D. उदय शंकर भट्ट

137. 'लहरों का राजहंस' किसका प्रसिद्ध नाटक है?
A. मोहन राकेश B. जगदीश चन्द्र माथुर
C. जयशंकर प्रसाद D. उदय शंकर भट्ट

138. 'आनरेरी मजिस्ट्रेट' का लेखक कौन है?
A. भगवती प्रसाद वाजपेयी B. रामकुमार वर्मा
C. देवकीनंदन खत्री D. हरिकृष्ण प्रेमी

139. 'अम्बपाली' किसकी रचना है?
A. श्रीनिवास दास B. उदय शंकर भट्ट
C. रामवृक्ष बेनीपुरी D. उपेन्द्र नाथ अश्क

140. ऐतिहासिक तथ्यों और काल्पनिक प्रसंगों के मिश्रण से जगदीश चन्द्र माथुर ने किस नाटक की रचना की?
A. क्षत्राणी B. शिवानी
C. कोणार्क D. सूर्यरथ

141. 'धूर्त रसिक लाल' का लेखक कौन है?
A. गोपालराम गहमरी B. भगवतीचरण वर्मा
C. शिवपूजन सहाय D. पं. लज्जा राम मेहता

142. प्रेमचंद रचित 'मान सरोवर' के कितने भाग हैं?
A. तीन भाग B. पांच भाग
C. सात भाग D. आठ भाग

143. 'वयं रक्षामः' किसका उपन्यास है?
A. गुरुदत्त का B. चतुरसेन शास्त्री का
C. भगवतीचरण वर्मा का D. इलाचन्द्र जोशी का

144. 'मुण्डमाल' किसकी रचना है?
A. कौशिक B. रामकुमार वर्मा
C. शिवपूजन सहाय D. उपरोक्त में से कोई नहीं

145. 'कोठरी की बात' कहानी-संग्रह किसका है?
A. यशपाल का B. जैनेन्द्र का
C. अज्ञेय का D. धर्मवीर भारती का

146. 'चारुमित्रा' और 'तैमूर की हार' किस लेखक के एकांकी हैं?
A. उपेन्द्र नाथ अश्क B. भुवनेश्वर प्रसाद
C. विष्णु प्रभाकर D. रामकुमार वर्मा

147. उपेन्द्रनाथ अश्क के अधिकांश एकांकी–
A. आदर्शवादी हैं B. राजनैतिक हैं
C. सामाजिक व पारिवारिक हैं D. मनोवैज्ञानिक हैं

148. 'यशस्वी भोज' किसका एकांकी है?
A. लक्ष्मी नारायण लाल B. देवराज दिनेश
C. उदय शंकर भट्ट D. सेठ गोविन्द दास

149. 'चिरंजीव' का विख्यात एकांकी है–
A. दो कलाकार B. माटी की मूरत
C. पंचकन्या D. दादी मां जागी

150. 'ध्रुवस्वामिनी' प्रसादजी का–
A. सामाजिक नाटक है B. ऐतिहासिक नाटक है
C. पारिवारिक नाटक है D. पौराणिक नाटक है

151. प्रसादजी का ध्रुवस्वामिनी नाटक–
A. व्यंग्यात्मक है
B. नायिका-प्रधान है
C. एक संस्कृत नाटक का हिन्दी अनुवाद है
D. उपरोक्त सभी

152. मोहन राकेश के निम्नलिखित नाटकों में से किस नाटक में कालिदास और मल्लिका के प्रेम का वर्णन है?
A. लहरों का राजहंस B. आधे-अधूरे
C. आषाढ़ का एक दिन D. उपरोक्त में से कोई नहीं

153. 'आहुति' हरिकृष्ण प्रेमी का प्रसिद्ध–
A. ऐतिहासिक उपन्यास है B. राष्ट्रीयतावादी उपन्यास है
C. पारिवारिक उपन्यास है D. व्यंग्यात्मक उपन्यास है

154. हिन्दी निबन्धकारों में सर्वश्रेष्ठ स्थान किसका माना जाता है?
A. जयशंकर प्रसाद का B. बालमुकुन्द गुप्त का
C. रामचन्द्र शुक्ल का D. प्रतापनारायण मिश्र का

155. 'चिन्तामणि' में किसके निबन्ध संग्रहीत हैं?
A. बाबू गुलाबराय B. मिश्रबन्धु
C. महावीर प्रसाद द्विवेदी D. रामचन्द्र शुक्ल

156. 'क्रोध', 'उत्साह' और 'मित्रता' जैसे मनोवैज्ञानिक निबन्ध किसने लिखे?
A. डा. नगेन्द्र B. डा. इन्द्रनाथ मदान
C. नंददुलारे वाजपेयी D. रामचन्द्र शुक्ल

157. 'विचारवीथी' में किसके निबन्ध संग्रहीत हैं?
A. महादेवी वर्मा B. सरदार पूर्ण सिंह
C. माधव प्रसाद मिश्र D. रामचन्द्र शुक्ल

158. निम्नलिखित में से कौन व्यंग्यात्मक और हास्य-प्रधान लेखों के लिए प्रसिद्ध है?
A. बालकृष्ण भट्ट
B. बालमुकुंद गुप्त
C. प्रतापनारायण मिश्र
D. रामचन्द्र शुक्ल

159. 'बात' और 'भौ' जैसे विषयों पर सुन्दर निबन्ध किसने लिखे?
A. श्यामसुन्दर दास ने
B. गुलाबराय ने
C. बालमुकुंद गुप्त ने
D. प्रतापनारायण मिश्र ने

160. ''शिवशम्भू का चिट्ठा'' किसका विख्यात व्यंग्यात्मक निबन्ध है?
A. अम्बिका दत्त व्यास
B. बदरी नारायण 'प्रेमघन'
C. बालमुकुंद गुप्त
D. महावीर प्रसाद द्विवेदी

161. 'फिर निराश क्यों' और 'मेरी कलम का राज्य' किस विद्वान के प्रसिद्ध निबन्ध हैं?
A. माधव प्रसाद मिश्र
B. बाबू गुलाबराय
C. सरदार पूर्ण सिंह
D. रामचन्द्र शुक्ल

162. निम्नलिखित में से कौन-सा निबंध संग्रह महादेवी वर्मा का है?
A. अशोक के फूल
B. मेरी असफलताएं
C. स्मृति की रेखायें
D. कला का विवेचन

163. 'कालीदास की निरंकुशता' किसकी विख्यात आलोचना-कृति है?
A. भारतेन्दु की
B. श्रीनिवास दास की
C. महावीर प्रसाद द्विवेदी की
D. कृष्ण बिहारी मिश्र की

164. 'नैषध चरित चर्चा' किसकी आलोचनात्मक कृति है?
A. महावीर प्रसाद द्विवेदी की
B. रामचन्द्र शुक्ल की
C. डा. नगेन्द्र की
D. श्याम सुन्दर दास की

165. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' किस विद्वान की अमर कृति है?
A. बाबू श्यामसुंदर दास की
B. हजारी प्रसाद द्विवेदी की
C. नंद दुलारे वाजपेयी की
D. रामचन्द्र शुक्ल की

166. 'साहित्य लोचन' का लेखक कौन है?
A. बाबू श्यामसुंदर दास
B. हजारी प्रसाद द्विवेदी
C. गुलाबराय
D. महादेवी वर्मा

167. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना रामचन्द्र शुक्ल की नहीं है?
A. कल्पना का आनंद
B. चिन्तामणि
C. काव्य में रहस्यवाद
D. हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा

168. हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में किसका महत्वपूर्ण योगदान है?
A. अयोध्या सिंह उपाध्याय
B. कामता प्रसाद गुरु
C. रामचन्द्र शुक्ल
D. बाबू गुलाबराय

169. निम्नलिखित में से किस विद्वान ने बेकन के अंग्रेजी निबन्धों का हिन्दी में 'बेकन विचार रत्नावली' नाम से अनुवाद किया?
A. रामचन्द्र शुक्ल
B. महावीर प्रसाद द्विवेदी
C. श्याम सुंदर दास
D. प्रतापनारायण मिश्र

170. महावीर प्रसाद द्विवेदी का नाम किस रूप में स्मरणीय है?
A. व्याकरण की शुद्धता
B. व्यास शैली
C. शैली के प्रवर्तक
D. उपरोक्त सभी

171. 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' और 'सूर साहित्य' किसकी प्रौढ़ रचनायें हैं?
A. बाबू गुलाबराय
B. श्याम सुंदर दास
C. महावीर प्रसाद द्विवेदी
D. हजारी प्रसाद द्विवेदी

172. 'सिद्धान्त और अध्ययन' किसका आलोचना सम्बन्धी ग्रंथ है?
A. श्याम सुंदर दास
B. हजारी प्रसाद द्विवेदी
C. नंद दुलारे वाजपेयी
D. बाबू गुलाबराय

173. 'बीसवीं शती' किसके आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है?
A. डा. नगेन्द्र
B. डा. दीनदयाल गुप्त
C. डा. भगीरथ मिश्र
D. नंददुलारे वाजपेयी

174. 'रीति काव्य की भूमिका' किसकी रचना है?
A. डा. नगेन्द्र
B. हजारी प्रसाद द्विवेदी
C. नंददुलारे वाजपेयी
D. बाबू गुलाबराय

175. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना डा. नगेन्द्र की नहीं है?
A. विचार और अनुभूति
B. काव्य-बिम्ब
C. साकेत—एक अध्ययन
D. कबीर

176. निम्नलिखित में से रामचन्द्र शुक्ल का निबन्ध संग्रह कौन-सा है?
A. रस मंजरी
B. निबन्धावली
C. चिन्तामणि
D. आत्म निरीक्षण

177. मिश्र बन्धुओं की समालोचना पुस्तक का नाम है—
A. साहित्यालोक
B. हिन्दी नवरत्न
C. नवरस
D. काव्य के रूप

178. 'संयोगिता स्वयंवर' किसकी रचना है?
A. राम विलास शर्मा
B. वियोगी हरि
C. रामवृक्ष बेनीपुरी
D. लाला श्रीनिवास दास

179. 'सच्ची वीरता' निबन्ध का लेखक कौन है?
A. अध्यापक पूर्ण सिंह
B. माधव प्रसाद मिश्र
C. डा. श्यामसुंदर दास
D. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

180. नीचे कुछ लेखकों और उनकी रचनाओं के जोड़े दिये हुए हैं। इनमें एक जोड़ा गलत है। बताइये कौन-सा जोड़ा गलत है?
A. नामवर सिंह – बकलम खुद
B. महावीर प्रसाद द्विवेदी – रसज्ञ रंजन
C. श्यामसुंदर दास – साहित्यालोचन
D. हजारी प्रसाद द्विवेदी – खरगोश के सींग

181. निम्नलिखित लेखकों और उनकी रचनाओं का कौन-सा जोड़ा गलत है?

A. त्रिशंकु – अज्ञेय
B. प्रतिक्रियायें – धर्मवीर भारती
C. आत्मनेपद – अज्ञेय
D. भाषा और संवेदना – रामस्वरूप चतुर्वेदी

182. आधुनिक हिन्दी आलोचना का सूत्रपात किस समय हुआ?

A. द्विवेदी युग में B. प्रसाद युग में
C. भारतेन्दु युग में D. शुक्ल युग में

183. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना नंद दुलारे वाजपेयी की नहीं है?

A. हिन्दी साहित्य–बीसवीं सदी
B. विचार और अनुभूति
C. प्रसाद की काव्यकला
D. आधुनिक साहित्य

184. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उच्च कोटि के समीक्षक थे। साथ ही उन्होंने एक उत्तम उपन्यास भी लिखा, जिसका नाम था–

A. बाणभट्ट की आत्मकथा B. कल्पना का आनंद
C. शिवशम्भू का चिट्ठा D. उपरोक्त में से कोई नहीं

185. हिन्दी साहित्य में संस्मरण लेखन आरम्भ करने का श्रेय–

A. बनारसीदास चतुर्वेदी को है B. महादेवी वर्मा को है
C. पद्मसिंह शर्मा को है D. श्रीराम शर्मा को है

186. निम्नलिखित में से कौन-सा एक संस्मरण महादेवी वर्मा का लिखा हुआ नहीं है?

A. पथ के साथी B. स्मारिका
C. वे जीते कैसे हैं D. मेरा परिवार

187. रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'मील के पत्थर' नामक संस्मरण लिखा। इसमें–

A. महापुरुषों के संस्मरण हैं
B. राजनीतिज्ञों के संस्मरण हैं
C. साहित्यिक व्यक्तियों के संस्मरण हैं
D. उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के संस्मरण हैं

188. 'मंटो मेरा दुश्मन' संस्मरण किसने लिखा है?

A. रामवृक्ष बेनीपुरी B. श्रीराम शर्मा
C. उपेन्द्र नाथ अश्क D. रामधारी सिंह दिनकर

189. निम्नलिखित में से कौन-सा संस्मरण-लेखक जोड़ा गलत है?

A. भूले हुए चेहरे – कन्हैया लाल मिश्र
B. सन् पर के संस्मरण – श्रीराम शर्मा
C. वे क्रान्ति के दिन – महावीर त्यागी
D. दिन और रात – राम विलास शर्मा

190. साहित्यिक विधा के रूप में जीवनी लेखन का प्रारम्भ कब हुआ?

A. प्रसाद युग में B. रामचन्द्र शुक्ल युग में
C. भारतेन्दु युग में D. महावीर प्रसाद द्विवेदी युग में

191. बनारसीदास चतुर्वेदी ने–

A. क्रान्तिकारियों की जीवनियां लिखीं
B. साहित्यकारों की जीवनियां लिखीं
C. स्वतंत्रता-संग्राम के सेनानियों की कहानियां लिखीं
D. उपरोक्त (A) और (C) दोनों

192. नीचे कुछ जीवनियों और उनके लेखकों के जोड़े दिये हुये हैं। बताइये इनमें कौन-सा जोड़ा गलत है?

A. कलम का सिपाही – अमृत राय
B. कलम का मजदूर – राम विलास शर्मा
C. आवारा मसीहा – विष्णु प्रभाकर
D. महात्मा बुद्ध – राहुल सांकृत्यायन

193. 'मालवीय जी के साथ तीन दिन' जीवनी का लेखक कौन है?

A. सीताराम चतुर्वेदी B. रामनरेश त्रिपाठी
C. छविनाथ पाण्डेय D. राधाकृष्ण दास

194. निम्नलिखित में से कौन-सा यात्रावृत्त मोहन राकेश का लिखा हुआ है?

A. सूखे सुनसान नालों में B. आखिरी चट्टान तक
C. धूप में सोई नदी D. अरे यायावर याद रहेगा?

195. निम्नलिखित में से कौन-सा यात्रावृत्त भदन्त आनन्द कौसल्यायन का लिखा हुआ है?

A. रेल का टिकट B. ठेके पर हिमालय
C. सुबह के रंग D. उपरोक्त सभी

196. नीचे कुछ रेखा-चित्र और उनके लेखकों के नाम के जोड़े दिये हुए हैं। बताइये इनमें कौन-सा जोड़ा गलत है?

A. खंडहर बोलते हैं – रास बिहारी लाल
B. हलाकू – वृन्दावनलाल वर्मा
C. माटी हो गई सोना – प्रकाश चन्द्र गुप्त
D. स्मृति की रेखायें – महादेवी वर्मा

197. 'चीड़ों पर चांदनी' किसका यात्रावृत्त है–

A. रघुवंश B. मोहन राकेश
C. अज्ञेय D. निर्मल वर्मा

198. कुछ पत्रिकाओं और उनके संपादक साहित्यकारों के जोड़े दिये गए हैं। बताइये कौन-सा जोड़ा गलत है?

A. सरस्वती – महावीर प्रसाद द्विवेदी
B. हंस – प्रेमचंद
C. माधुरी – रूपनारायण पाण्डेय
D. सुधा – सुमित्रानंदन पंत

199. 'क्या भूलूं क्या याद करूं'' किसकी लिखी हुई सुन्दर आत्मकथा है?

A. यशपाल B. अमृतलाल नागर
C. हरिवंश राय बच्चन D. राहुल सांकृत्यायन

200. निराला जी ने कुछ समय तक सम्पादन किया था–

A. प्रभा का B. समालोचना का
C. सरस्वती का D. मतवाला का

उत्तरमाला

1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**
C	C	A	B	C	D	B	C	A	A
11	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
C	A	C	D	D	A	D	C	C	A
21	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**
A	D	A	D	D	B	D	B	D	D
31	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
D	D	B	D	D	D	D	C	B	D
41	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**
B	D	D	D	A	C	D	A	D	D
51	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
C	C	D	A	B	A	A	A	D	B
61	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**
C	A	B	B	D	D	B	A	A	A
71	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
C	A	B	D	D	D	D	D	A	C
81	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**
A	C	A	A	B	B	A	A	C	D
91	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
D	D	D	C	A	D	A	C	C	B
101	**102**	**103**	**104**	**105**	**106**	**107**	**108**	**109**	**110**
B	B	C	B	B	D	B	D	D	B
111	**112**	**113**	**114**	**115**	**116**	**117**	**118**	**119**	**120**
D	A	C	D	A	B	A	A	D	C
121	**122**	**123**	**124**	**125**	**126**	**127**	**128**	**129**	**130**
C	D	A	C	D	D	D	A	D	D
131	**132**	**133**	**134**	**135**	**136**	**137**	**138**	**139**	**140**
C	C	D	A	C	C	A	A	C	C
141	**142**	**143**	**144**	**145**	**146**	**147**	**148**	**149**	**150**
D	D	B	C	C	D	C	B	D	B
151	**152**	**153**	**154**	**155**	**156**	**157**	**158**	**159**	**160**
B	C	A	C	D	D	D	C	D	C
161	**162**	**163**	**164**	**165**	**166**	**167**	**168**	**169**	**170**
B	C	C	A	D	A	D	B	B	D
171	**172**	**173**	**174**	**175**	**176**	**177**	**178**	**179**	**180**
D	D	D	A	D	C	B	D	A	D
181	**182**	**183**	**184**	**185**	**186**	**187**	**188**	**189**	**190**
B	D	B	A	C	C	A	C	D	C
191	**192**	**193**	**194**	**195**	**196**	**197**	**198**	**199**	**200**
D	B	B	B	A	C	D	D	C	D

❑ ❑ ❑